The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 5, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-401X

अथर्ववेद में राष्ट्रीय एकता की अवधारणा और आधुनिक भारत

डॉ0 नर्वदेश्वर पाण्डेय[1]

[1]*सह-आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजीय अध्ययन, का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या।*

शोध सारांश

अथर्ववेद के द्वादशं काण्ड्म को पृथ्वी सूक्त कहा जाता है। इसमें सभी भूतों को पृथ्वी माता की सन्तान कहा गया है। इसे मातृभूमि सूक्त भी कहते हैं। मन्त्रों में भूमि की विशेषताओं एवं उसके प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराया गया है। भूमि अथवा मातृभूमि के प्रति कर्तव्य पालन करने वालों के लिए आवश्यक गुणों, प्रवृत्तियों, मर्यादाओं का भी उल्लेख है। उस क्रम में अनुभव होने वाली कठिनाइयों तथा उनके निवारणार्थ सूत्रों का भी उल्लेख है। राष्ट्रीय अवधारणा तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को विकसित, पोषित एवं फलित करने के लिए अत्यन्त उपयोगी सूक्त है।

शब्द-कुन्जी: अथर्ववेद, द्वादशं काण्डम्, भूमि सूक्त, पृथ्वी सूक्त, मातृभूमि सूक्त।

अथर्ववेद द्वादशं काण्डम् (1-भूमि सूक्त)

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षातपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ।।अथर्ववेद-**12।1।1**

सत्यनिष्ठा, विस्तृत यथार्थ बोध, दक्षता, क्षात्रतेज, तपश्चर्या ब्रह्मज्ञान और त्याग-बलिदान ये भाव भूमि अथवा मातृभूमि का पालन-पोषण और संरक्षण करते हैं भूतकालीन और भविष्य में होने वाले सभी जीवों का पालन करने वाली मातृभूमि हमें विस्तृत स्थान प्रदान करें।

(स्वार्थपूर्ण, महत्वाकांक्षाओं से ग्रस्त व्यक्ति, जन्मभूमि या मातृभूमि को पुष्ट एवं विकसित नहीं कर सकते।)

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या विभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः ।।अथर्ववेद-**12।1।2**

हमारी जिस भूमि के मनुष्यों के मध्य (गुण, कर्म और स्वभाव की भिन्नता होने पर भी) परस्पर अत्यधिक सामंजस्य और ऐक्यभसाव है, जो हमारी मातृभूमि रोग-नाशक औषधियों को धारण करती है, वह हमारी कामना पूर्ति और यशोवृद्धि का साधन बने।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ।।अथर्ववेद**12।1।3**

हमारी जिस मातृभूमि में सागर, महासागर, नद, नदी, नहर, झीलें-तालाब, कुएँ आदि जल साधन हैं; जहाँ सब भाँति के अन्न, फल तथा शाक आदि अत्यधिक मात्रा में पैदा होते है; जिसके सभी प्राणा सुखी हैं, जिसमें कृषक लोग, शिल्पकर्म विशेषज्ञ तथा उद्यमी लोग अत्यधिक संगठित हैं, इस प्रकार की हमारी पृथ्वी हमें श्रेष्ठ भोग्य पदार्थ और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हो।

(जहाँ प्राकृतिक सम्पदा के साथ विभिन्न प्रतिभा-सम्पन्न वर्ग परस्पर तालमेल के साथ रहते हैं; वहाँ भूमि सभी प्रकार के वैभव प्रदान करती है। राष्ट्र की सुरक्षा में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है।)

यस्याक्षतस्त्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामत्रं कृष्टयः संबभूवुः।
या विभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यत्रे दधातु ।।अथर्ववेद**12।1।4**

हमारी जिस भूमि में उद्यमी और शिल्पकला में निपुण, कृषि कार्य करने वाले हुए हैं, जिस भूमि में चार दिशाएँ और चार विदिशाएँ धान, गेहूँ आदि पैदा करती हैं, जो विभिन्न प्रकार से प्राणधारियों और वृक्ष-वनस्पतियों का पालन-पोषण और संरक्षण करती हैं, वह मातृभूमि हमें गौ आदि पशु और अन्नादि प्रदान करने वाली हो। (वर्तमान समय में भारत सरकार श्वेत क्रान्ति एवं पशु-पक्षियों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है।)

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचाक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन् ।
गवामश्वानां वयस्स्क्ष विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु ।।अथर्ववेद-**12।1।5**

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

हमारी जिस पृथ्वी में प्राचीन ऋषियों ने अनेक प्रकार के पराक्रमी कर्म सम्पन्न किये हैं, जिसमें देव समर्थक वीरों ने आसुरी शक्तियों से धर्म-युद्ध किया है, जिस भूमि में गाय, घोड़े और पशु-पक्षी विशेष रूप से आश्रय ग्रहण करते हैं, ऐसी हमारी मातृभूमि हमारे ज्ञान-विज्ञान, शौर्य, तेज, वीर्य और ऐश्वर्य की वृद्धि करने वाली हो।

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी ।
वैश्वानरं विभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु ।।अथर्ववेद-**12।1।6**

विश्व के सभी जीवों का पोषण करने वाली, सम्पदाओं (खनिजों) की खान, सबको प्रतिष्ठित करने वाली, स्वर्णिम वक्ष वाली, जगत् (सभी प्राणियों) का निवेष करने वाली, वैश्वानर (प्राणाग्नि) का भरण-पोषण करने वाली यह भूमि अग्रणी, बलशाली इन्द्रदेव तथा हम सबको अनेक प्रकार के धन धारण कराने वाली हो।

यां रक्षान्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा।।अथर्ववेद-**12।1।7**

निद्रा, तंद्रा, आलस्य, अज्ञान आदि दुर्गुणों से रहित देवगण (या देवपुरूष) जिस विशाल भूमि की, प्रमाद-रहित होकर रक्षा करते है, वह मातृभूमि सभी उत्तम,प्रिय तथा कल्याणकारी पदार्थों से हमें सुसम्पन्न करे तथा हमें ज्ञान वर्चस्स् और ऐश्वर्य प्रदान करें।

यार्णवेऽषि सलिलमग्र आसीद् यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः। परमेव्योमन्त्सत्येनावृतममृतं
पृथिव्याः। सा नो भूमिस्त्विर्षि बलं राष्ट्रे दधादधात्तमे ।।अथर्ववेद-**12।1।8**

जिस भूमि का हृदय परमव्योम के सत्य-अमृत प्रवाह से आवृत रहता है, मनीषीगण अपनी कुशलता से जिसका अनुगमन करते हैं; वह भूमि हमारे श्रेष्ठ राष्ट्र में तेजस्विता, बलवत्ता बढ़ाने वाली हो।

(पृथ्वी अकाश के सूक्ष्म अमृत प्रवाहों से पोषण प्राप्त करती है। ज्ञानवान् लोग भी पृथ्वी की विशेषताओं का लाभ अपनी प्रतिभा द्वारा उठाते रहते हैं। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि पृथ्वी एवं आकाश प्रदुषण से मुक्त रहे।)

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 5, Issue 2 – 2021
ISSN: 2581-401X

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा ।।अथर्ववेद-**12।1।9**

जिस धरा पर चारो ओर विचरने वाले परिव्राजक, संन्यासी शीतल जल की भाँति समदृष्टि सम्पन्न उपदेश देते हुए रात-दिन सजग होकर ज्ञान का संचार करते रहते हैं। जो भूमि हमें सभी प्रकार के अन्न-जल और दूध, घी इत्यादि प्रदान करती है, वह मातृभूमि हमारी तेजस्विता, प्रखरता को बढ़ाए।

यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे। इन्द्रो यां चक्र आत्मनेऽनमित्रीं शचीपतिः।
सा नो भूमिर्विसुजतां माता पुत्राय मे पयः ।।अथर्ववेद-**12।1।10**

अश्विनीकुमारों ने जिस धरा का मापन किया, विष्णुदेव ने जिस पर विभिन्न पराक्रमी कार्य सम्पन्न किये और इन्द्रदेव ने जिसे दुष्ट शत्रुओं से विहीन करके अपने नियन्त्रण में किया था, वह पृथ्वी मातृसत्ता द्वारा पुत्र को दुग्धपान कराने के समान ही अपनी (हम सभी) सन्तानों को खाद्य पदार्थ प्रदान करें।

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु। बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां
भूर्मि पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्। अजीऽहतोध्यष्ठां पृथिवीमहम् ।।अथर्ववेद-**12।1।11**

हे धरतीमाता! आपके हिमाच्छादित पर्वत और वन हमारे लिए सुखदायक हों, वे शत्रुओं से रहित हो। विभिन्न रंगों वाली इन्द्रगुप्ता (इन्द्र-रक्षित) पृथ्वी पर मैं क्षय रहित, कभी पराजित न होने वाला और अनाहत होकर प्रतिष्ठित रहूँ। (वर्तमान समय में चीन हिमाच्छादित पर्वतों लद्दाख, अरूणाचल प्रदेश आदि जगहों पर अधिकार करने की कुचेष्टा कर रहा है।)

यत् ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः। तासु नो धेह्यभि नः पवस्व
माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु ।।अथर्ववेद-**12।1।12**

हे पृथिवीमाता! जो आपके मध्यभाग और नाभिस्थान हैं तथा आपके शरीर से जो पोषणयुक्त पदार्थ प्रादुर्भूत होते हैं; उसमें आप हमें प्रतिष्ठित करें और हमें पवित्रता प्रदान करें। वह धरती हमारी माता है और हम सब उसके पुत्र हैं। पर्जन्य (उत्पादक प्रवाह) हमारे पिता हैं, वे भी हमें पूर्ण करें-सन्तुष्ट करें।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

यस्यांवेदिं परिगृह्णन्ति भूम्यां यस्यां तन्वते विश्वकर्माणः। यस्यां मीयन्ते स्वरवः
पृथिव्यामूर्ध्वाः शुक्रा आहुत्याः पुरस्तात्। सा नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना ।।अथर्ववेद**12।1।13**

जिस भूमि पर सभी ओर वेदिकाएँ बनाकर विश्वकर्मादि (विश्व सृचेता अथवा सृजनशील मनुष्य यज्ञ का विस्तार करते हैं। जहाँ शुक्र (स्वच्छ या उत्पादक) आहुतियों के पूर्व यज्ञीय यूप (आधार) स्थापित किये जाते हैं-यज्ञीय उद्घोष होते हैं। वह वर्धमान भूमि हम सबका विकास करें।

(भूमि को यज्ञीय-परमार्थ कर्मों की वेदी कहा गया है**,** श्रेष्ठ यज्ञीय प्रक्रिया के पहले उसके लिए प्रवृत्तियों के आधार बनाने होते हैं**,** तभी वे फलित होते हैं तथा इसके द्वारा प्रदुषण का नष्ट होता है।)

यो नो द्वेषत् पृथिवि यः पृतन्याद् योऽभिदासान्मनसा यो वधेन ।
तं नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि ।।अथर्ववेद**12।1।14**

हे मातृभूमे! जो हमसे द्वेष-भावना रखते हैं**,** जो सेना द्वारा हमें पराभूत करने के इच्छुक हैं**,** जो मन से हमारा अनिष्ठ चाहते हैं जो हमें परतन्त्रता के बन्धन में जकड़ने की कुचेष्टा करते हैं**,** जो हमारा संहार करके हमें पीड़ा पहुँचाना चाहते हैं**,** ऐसे हमारे शत्रुओं का आप समूल नाश करें। (वर्तमान समय में पाकिस्तान भारत के प्रति ऐसी भावना रख रहा है किन्तु हमारी मातृभूमि अपने उत्पादन के द्वारा पाकिस्तान की कुचेष्टा को नष्ट कर रही है**,** भारत खाद्यान्न के मामले में निर्भर हो चुका है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी 'आत्म निर्भर भारत' का आवाहन कर चुके है)

त्वज्जातस्त्वयि चरन्ति मर्त्यास्त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः। तवेमे पृथिवि पन्च मानवा
येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य उद्यन्त्सूर्यो रश्मिभिरातनोति ।।अथर्ववेद-**12।1।15**

हे पृथिवीमाता! आपसे उत्पन्न और आपके ऊपर विचरण करने वाले प्राणियों**,** दोपायों**,** चौपायो**,** सभी का आप पालन-पोषण करती हैं। सूर्य अपनी अमृतस्वरूपी रश्मियों को जिनके लिए चारों ओर विस्तारित करता है**,** ऐसे हम पाँच प्रकार के मनुष्य प्रकार के मनुष्य (विद्वान**,** शूरवीर**,** व्यापारी**,** शिल्पकार और सेवा धर्म धर्मरत) आपके ही हैं।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

हे वाचस्पतिदेव! जो हमारे सम्पूर्ण कर्मों को साधने वाली पाँच वस्तुएँ उत्पन्न हुई हैं, हमारे प्राण उनमें सहयोग भावना रखते हुए यहीं स्थित रहें। हे प्रजापते! ऐसे आपको सूर्यदेव आयु और तेज के साथ धारण करें।

वाचस्पते सौमनसं मनश्च गोष्ठे नो गा जनय योनिषु प्रजाः। इहैव प्राणः सख्ये नो अस्तु तं त्वा परमेष्ठिन् पर्यहमायुषा वर्चसा द्धाम ।।अथर्ववेद-**12।1।16**

हे वाचस्पति देव! हम सभी के मन शुभ संकल्पों से युक्त हों, आप हमारी गोशाला में प्रचुर गौओं एवं घर में वीर संतानों को पैदा करें। प्राण हमारे साथ मैत्री भावना रखते हुए इसी लोक में रहें। हे प्रजापते! ऐसे आपको हम दीर्घायु और तेजस्विता के साथ धारण करते हैं।

परि त्वा धात् सविता देवो अग्निर्वर्चसा मित्रावरूणावभि त्वा ।
सर्वा अरातीवक्रामात्रेहीदं राष्ट्रमकरः सूनृतावत् ।।अथर्ववेद-**12।1।17**

हे राष्ट्रधिवपते! सर्वप्रेरक सवितादेव आपको चारों ओर से परिपुष्ट करें। अग्नि, मित्र तथा वरूणदेव आपको चारों ओर से संरक्षित करें। आप सभी राष्ट्रद्रोही शत्रुओं पर चढ़ाई करते हुए अगे बढ़े तथा इस राष्ट्र को प्रिय और सत्यवाणी से युक्त करें।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा कि जो भारत में जन्म लेता है, वह धन्य होता है। यह भी सच है कि यह भारत धन्य है, जिसमें इतने महापुरूषों ने जन्म लिया और उनमें एक ऐसे महापुरूष महात्मा गाँधी थे। गाँधी जी के पूज्य आदर्श और उसूल ऐसे थे कि वे उनके जीवन काल में मायने रखते थे, आज भी मायने रखते हैं और आते हुए युग के लिए भी मायने रखेंगे। गांधी जी ने गरीबों के लिए, हरिजनों के लिए, पिछड़ी जातियों के लिए सारा जीवन बिताया और सामाजिक एकता के लिए अपनी जान तक बलिदान कर दी। इन सबसे हमको यह सबक सीखना है कि हम भारत को कैसे बनाएंगे, और उनके जो ऊंचे उसूल हैं, उनको कैसे बढ़ाएंगे।

हमारा ध्यान भारत के नौजवानों की तरफ जाना चाहिए। वे इस नए भारत की रीढ़ हैं। वे मजबूत रहेंगे तो भारत मजबूत है, भारत का भविष्य मजबूत है। आजकल के जमाने में नौजवानों के मन में, भारत में और बहुत से देशों में बेचैनी है। भारत के नौजवानों पर हमारी

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

बहुत बड़ी आशाएं हैं। चाहे वे विज्ञान का काम करें, चाहे वे कोई दूसरा काम करें। आज वे नई दिशा में देश को ले जा सकते हैं और देश को मजबूत कर सकते हैं। और मुझे पूरी आशा है कि वे इसमें लगेंगे और उनकी जो बेचैनी है, उसको वे तोड़फोड़ के कामों में नहीं पड़ेंगे जिनसे उनका भी नुकसान हो और देश का भी नुकसान हो, बल्कि उस शक्ति को, उस उत्साह को ऐसा जोड़ेगे कि उससे सारी जनता को उत्साह मिले देश को तेजी से आगे बढ़ा सकेंगे।

देश के शासन तथ निर्माण की जिम्मेदारी में सभी साझीदार हैं, और कोई भी व्यक्ति या वर्ग इससे अलग नहीं रह सकता। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि देश के अधिक लोग, विचार-विमर्श और कामां में हिस्सा लें। हम प्रगति में सबको हिस्सेदार बनाना चाहते हैं।

अल्पसंख्यकों, आदिम जातियों, हरिजनों, पहाड़ी इलाकों तथा दूसरे पिछड़े और अभावग्रस्त क्षेत्रो की ओर ध्यान देकर विशेष काम करने की आवश्यकता है। हमारी विशाल और विविध आबादी का कोई भी हिस्सा यह न समझे कि हम उन्हें भूले हुए हैं। उनकी उपेक्षा से हम सबका नुकसान होगा।

आर्थिक क्षेत्र में हमारा लक्ष्य है स्वदेशी और आर्थिक स्वराज्य और हमें यह दिखा देना है कि अपने पांव पर खड़ा होना केवल हमारा लक्ष्य नहीं, बल्कि हमारा कर्म है।

हमें अपनी सभी राष्ट्रीय भाषाओं का विकास करना है। हमें सस्ती पुस्तकें तथा उनके अनुवादों को लाखों की तादाद में छपवाने का बंदोबस्त करना है, ताकि वे ज्ञान और संस्कृति के अनगिनत पहिए बन जाएं और विज्ञान तथा तकनीक की जानकारी करोड़ों लोगों तक पहुंचा सकें।

वैज्ञानिकों, लेखकों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों की प्रतिभा के विकास के लिए पूरा मौका देना है। यही लोग भारत की जनशक्ति को सही और विवेकपूर्ण प्रेरणा तथा दिशा दे सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अथर्ववेद संकलन सातवलेकर, पं. श्रीपाद दामोदर 'अथर्ववेद' चतुर्थ भाग-1.

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

2. चुनौती भरे वर्षः 'प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के भाषण' (1966-1969) प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली।
3. 'एक पुष्ठ इतिहास का' प्रकाशन विभागख् सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरका, पटियाला हाउस, नई दिल्ली।
4. सिह जसजीत, नेशनल सेक्योरिटीः ए फ्रेमवर्क कप नेशनल स्ट्रेटजी, स्ट्रेटाजिक एनालिसिस, वालूम 11, नं0 8, 1987.
5. प्रधान, प्रद्योत, 'इण्डियन सेक्योरिअी इनवायरमेन्ट इन 1990 एस-एक्सटर्नल हाईमेशन' स्ट्रेटजिक एनालिसिस वालूम-12, नं0 6, सितम्बर 1989.
6. पनकठवालिया, लै0 जनरल पी.वी.एस.एम. 'नेशनल सेक्योरिटीः प्रेसपेक्टिव लेसर, इण्टरनेशनल नई दिल्ली 1986.

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.